मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

मोदी बनवायेंगे सड़क जनता से होगी वसूली कड़क
पुलिस संरक्षण में चलता देह व्यापार व जुआ — 3

निजी बीमा कम्पनियों को भारत
सरकार ने दी लूट की छूट — 4

पंजाब : ड्रग तस्करी का गढ़
हम चुनाव नहीं चाहते.. कोई चुनाव नहीं चाहता — 5

कैथल रैली: हुड्डा के साथ जो हुआ वह तो होना ही था
बिना सेना का सेनापति कुलदीप पहुंचा तिलक कराने — 8

वर्ष 27 अंक 20 फरीदाबाद, सोमवार, 1-15 सितम्बर 2014 फोन : - 9999595632 2 ₹

मोदी-मंत्र 'न खाऊंगा न खाने दूंगा'

संधियों पर लागू नहीं हर लूट को संवैधानिक छूट!

आजकल प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार के खिलाफ़ जंग का एलान अपनी (चुनावी) सभाओं में किया हुआ है। असलियत बिल्कुल विपरीत है। लालकिले से योजना आयोग अंबानी-अडानी के हवाले कर दिया गया, राबर्ट वाड्रा के साक्षात घोटाले पर चुप्पी है जबकि एम्स के ईमानदार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ विजिलेंस अधिकारी संजीव चतुर्वेदी की संघी हस्ती जे पी नड्डा के दबाव में छुट्टी कर दी गयी। 'आप' द्वारा अंबानी-मोइली लूट साठगांठ के विरुद्ध दायर आपराधिक मुकदमे को रफ़ा-दफा करने के लिये अध्यादेश निकाला गया कि दिल्ली सरकार का एंटी करप्शन ब्यूरो इस मामले में तफ़्तीश कर ही नहीं सकता।

मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो

रामायण में सुरसा का प्रसंग आता है। हनुमान जी को खाने के लिये सुरसा ने ज्यों-जयों अपना मुह बड़ा किया, त्यों-त्यों हनुमान जी का शरीर और बड़ा होता गया। परिणामस्वरूप सुरसा थक गयी और हनुमान सलामत रहे। प्रधानमंत्री मोदी का मुंह भी आजकल सुरसा के मुंह जैसा ही बर्ताव कर रहा है। वे ज्यों-ज्यों अपने मुंह से बढ चढ कर भ्रष्टाचार के खिलाफ़ लफ्फ़ाजी करते हैं, त्यों-त्यों उनकी संघी मंडली भ्रष्टाचार के आकार को दिन दूणा रात चौगुणा करने में लगी नज़र आती है। यहां तक कि अपने हर ऐसे कुकृत्य को वे संवैधानिक जामा भी पहनाना नहीं भूलते।

संजीव चतुर्वेदी के मामले ने तो जैसे मोदी सरकार की नीयत का पर्दा फ़ाश ही कर डाला है। ईमानदारी का तमगा लगाकर घूमने वाले केन्द्रिय स्वास्थ्य मन्त्री हर्षवर्धन ने इस ईमानदार अफ़सर को भ्रष्टाचारियों के रास्ते से हटाकर अपने मुंह पर जो कालिख मली है वह शायद ही छूटे। एम्स का बच्चा-बच्चा जानता है कि वहां होनेवाले घोटालों का पर्दाफ़ाश करने में अपने 2 साल के कार्यकाल में चतुर्वेदी ने नये मानक स्थापित किये। पहले इस संस्थान की लूट में हिस्सेदारी करने वाले कांग्रेसी इनको रास्ते से हटाने में लगे रहे थे, वो काम अब भाजपाई गिरोह ने कर दिखाया। इस गिरोह के मुखिया जे पी नड्डा संघ और भाजपा के वरिष्ठ तो हैं ही, पार्टी अध्यक्ष बनने से बाल-बाल ही रह गये।

दिल्ली के सत्ता के गलियारों में मोदी और हुड्डा की चाय मुलाकात की काफ़ी चर्चा है। कहने को यह मुलाकात कैथल रैली में हुड्डा के खिलाफ़ नारे लगाने से पैदा हुई बदमज़गी को दूर करने के लिये हुई। पर क्या मोदी और हुड्डा ने एक दूसरे को संजीव चतुर्वेदी को ठिकाने लगाने के लिये बधाई नहीं दी होगी? ध्यान रहे कि एम्स में आने से पहले चतुर्वेदी हरियाणा सरकार की सेवा में कार्यरत थे, वहां उन्होंने हुड्डा गिरोह द्वारा वन विभाग में किये जा रहे फ़जीवाड़े पर सवाल उठाने शुरू किये थे। इनमें से कई हुड्डा के क्षेत्र झज्जर के भी थे। जाहिर है। चापलूसी -पसंद हुड्डा को ऐसी कर्त्तव्य निष्ठा भला कैसे रास आ सकती थी। बस पिल पड़े रोज़ चतुर्वेदी को घेरने में। हथियार थे चार्जशीट, तबादले और ए सी आर।

किस्मत से उस दौरान जयराम रमेश के रूप में एक ईमानदार केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मन्त्री दिल्ली में मौजूद थे। उनकी पहल पर चतुर्वेदी को हुड्डा के प्रकोप से छुटकारा मिला। राष्ट्रपति के स्तर पर चतुर्वेदी की सेवा याचिकायें स्वीकार की गयीं और उन्हें प्रतिनियुक्ति पर एम्स दिल्ली में सी वी ओ लगाया गया। विडम्बना यह कि हुड्डा का यह शिकार, जिसका केन्द्र में कांग्रेसी सरकार रहते बाल भी बांका नहीं हुआ, आज भाजपाई सरकार के हाथों धराशाही किया जा रहा है। इसलिये अगर मोदी और हुड्डा ने एक दूसरे को बधाई दी हो तो कोई ताज्जुब नहीं।

चोरी और सीनाजोरी पुरानी कहावत है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने इस मामले में सीनाजोरी के नये रिकार्ड बनाये हैं। कहां तो एक ईमानदार अफ़सर को चोरों के कहने पर प्रताड़ित करने के बाद हर्षवर्धन को अपना मुंह छिपा कर रखना चाहिये था, और कहां वह एक सूरमा के अंदाज में चतुर्वेदी की एम्स में नियुक्ति को ही असंवैधानिक घोषित कर रहा है। क्या प्रधानमंत्री मोदी यह बतायेंगे कि भ्रष्टाचारियों को पकड़ने वाले को असंवैधानिक बताने वाला खुद किस मर्ज की दवा कहलायेगा?

पर मोदी भी क्या बतायेंगे? सरकार के आर्थिक स्रोतों की देखभाल व उसके वितरण के लिये जिम्मेदार योजना आयोग को पूंजीशाहों के हवाले करने को क्या कहा जायेगा? पहले ही बिल्ली को जी भरकर दूध चट करने की छूट थी और अब तो रखवाली ही उसके जिम्मे कर दी है। ऐसे में क्या हर्षवर्धन और क्या मोदी-सबका समान एजेंडा है। क्या राबर्ट वाड्रा को लेकर मोदी और हुड्डा का एक ही एजेंडा नहीं है? दोनों को जोड़नेवाली कड़ी है डी एल एफ, जो वाड्रा को 200 करोड़ का लाभ पहुंचाने के षड़यन्त्र में हुड्डा के साथ शामिल है। अब मामला यूं है कि डी एल एफ में संघियों एवं भाजपाइयों के पैसे भी लगे हुए हैं। मोदी उसे कैसे छेड़ें? संजीव चतुर्वेदी प्रकरण भाजपा और मोदी सरकार के लिये एक ऐसा आइना सिद्ध हो रहा है जिसमें झांकने पर उन्हें अपनी भ्रष्टाचारी सूरत से सामना करना पड़ता है। यह भी संभव नहीं रहा कि वे स्वयं को इस आइने में झांकने से बचा सकें।

ईमानदारी की घेराबंदी

नरेन्द्र मोदी

संजीव चतुर्वेदी

हर्षवर्धन

बड़े हैरान हैं दीपक ये किसको रोशनी दे दी
अंधेरों के जो साथी हैं उन्हीं को चांदनी दे दी
हटा पद से बड़े निर्भीक उस संजीव को तुमने
बुरे लोगों को जैसे हाथ में संजीवनी दे दी

ख़बर दार

गडकरी कृष्णपाल का जादू हवा में बनाया यमुना पुल

फ़रीदाबाद (म.मो.) कांग्रेसी भूपेन्द्र हुड्डा एंड कम्पनी हो चाहे भाजपाई गडकरी एवं कृष्णपाल की जोड़ी, झूठ बोलने व जनता को बेवकूफ़ बनाने में दोनों का कोई सानी नहीं।

शुक्रवार 15 अगस्त को केन्द्रीय सड़क परिवहन मन्त्री नितिन गडकरी व उनके जूनियर कृष्णपाल ने ज़िले के मंझावली गांव में एक बड़ी (चुनावी) जनसभा करके यमुना नदी पर एक चारमार्गी पुल का शिलान्यास किया। वैसे यही काम करीब 25 वर्ष पूर्व कांग्रेसी सरकार के एक केन्द्रीय मन्त्री राजेश पायलेट भी कर के गुजर चुके हैं। बाद में आई अटल बिहारी बाजपेयी सरकार से भी यह पुल नहीं बन पाया।

इसमें कोई दो राय नहीं कि इस पुल के बन जाने से फ़रीदाबाद सीधे नोएडा से जुड़ जायेगा। इससे जहां राष्ट्रीय राजमार्ग पर से वाहनों का दबाव काफ़ी कम होगा वहीं वाहनों में फुकने वाले तेल की भारी बचत होने से प्रदूषण भी घटेगा और लोगों का समय तो बचेगा ही बचेगा। पर इसके लिये फ़र्जी शिलान्यास की नौटंकी करने की नहीं पुल बनाने की जरूरत है।

पुल बनाने के इस सारे प्रोजेक्ट के लिये करीब 37 एकड़ ज़मीन हरियाणा तथा 8 एकड़ ज़मीन यू पी में चाहिये जिसे दोनों राज्यों की सरकारों ने अधिगृहीत करना है। इतनी सारी ज़मीन पुल को सड़कों से जोड़ने के लिये जरूरी है। और ज़मीन अधिग्रहण करने से पहले पूरे प्रोजेक्ट की डी पी आर (विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट) बननी जरूरी है, जो अभी तक बनी ही नहीं है। वैसे यह भी किसी से छिपा नहीं है कि ज़मीन अधिग्रहण की प्रक्रिया अपने आप

शेष पेज दो पर

शिलान्यास का गोरख-धंधा

दरअसल शिलान्यास का अर्थ यह हुआ करता कि जब भी कोई निर्माण कार्य शुरू होना होता था तो पहली ईंट किसी भले एवं महान व्यक्ति से रखवाई जाती थी और उसके साथ ही पेशेवर श्रमिक एवं कारीगर काम को पूरा करने में लग जाया करते थे। लेकिन अब प्रथा यह बन गयी है कि जनता को उल्लू बना कर वाह-वाही लूटने के लिये अथवा चुनाव के मौसम में वोट लूटने के लिये इसका इस्तेमाल एक पाखंड के रूप में किया जा रहा है।

मौके पर लगे शिलान्यासपट (जिसे अब वहां से हटा भी दिया गया है) पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव व हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेंद्र हुड्डा का नाम भी शिलान्यास करने वालों में लिखा है। लगता है उनसे स्वीकृति लिये बिना अथवा उनकी मर्ज़ी के बिना ही उनका नाम जोड़ दिया गया होगा। यह भी संभव है कि भाजपा वालों के असल ड्रामे को समझने के बाद इन लोगों ने इसमें शामिल होने से मना कर दिया हो।

इसी क्षेत्र के गांव भैंसरावली के 25 वर्षीय गज्जे, जो रोज़ाना शहर में दूध सप्लाई करने आता है, को जब इस संवाददाता ने पुल बनने की बधाई दी तो उसने छूटते ही कहा, ''...अजी काहे का पुल, हमै बीसियां बरस हो गये इन ड्रामेन कु देखते। पहले भी एक मंत्री कर गया था, फ़िर चौटाला भी कर गया था। ये कोरे बोटन कु डोल रे हैं। कृष्णपाल अपने छोरा कु बनाने के चक्कर मै कर्‌रो है।'' उसने यह भी बताया कि इलाके में काफ़ी बिल्डरों ने ज़मीने ले रखी हैं अब उनके भाव जरूर बढ जायेंगे। गज्जे सही सही-सही तो नहीं बता पाया लेकिन उसने अंदेशा जरूर जाहिर किया कि कृष्णपाल ने भी क्षेत्र में काफ़ी ज़मीन ले रखी हैं। जाहिर है इस ड्रमेबाज़ी से सम्बन्धित व्यवसायियों को काफ़ी लाभ होना तय है।

भाजपा टिकट कांऊटर पर धनबल सबसे प्रबल

फरीदाबाद (म.मो.) चुनाव चाहे लोकसभा के हों या विधानसभा के, बल्कि अब तो राज्यसभा के भी, टिकटों के दाम लगना कोई नई अथवा छिपी बात नहीं रह गयी है। खुलेआम टिकटों की बिक्री होती है। राजनीति के बाज़ार में कभी किसी का भाव गरम होता है तो किसी का नरम।

आज के बाज़ार में भाजपा का भाव सबसे ज़्यादा गरम चल रहा है। इन भावों में गरमी-नरमी मुनाफ़े की सम्भावनाओं पर निर्भर करती हैं। कल तक जो मुनाफ़ा कांग्रेस की टिकट पर नज़र आता था, आज उससे कहीं ज़्यादा भाजपा की टिकट पर नज़र आता है। क्योंकि इसे सत्ता प्राप्ति के ज़्यादा नज़दीक आंका जा रहा है और सत्ता से ही लूट और मुनाफ़ा निकलता है।

फ़रीदाबाद सीट जिसका प्रतिनिधित्व फ़िलहाल आनंद कौशिक करते हैं के लिये भाजपा में भारी मारामारी हो रही है। हो तो कांग्रेस में भी रही है परन्तु नाममात्र को क्योंकि हुड्डा सरकार तथा आनंद कौशिक के कारनामों ने यहां कांग्रेस को जीतने लायक छोड़ा ही नहीं। भाजपा की ओर से यहां मुख्य दावेदार धनेश अधलक्खा, प्रवेश मेहता व ज़िला भाजपा प्रधान अजय गौड़ रहे हैं। परन्तु यकायक इन सब को पछाड़ कर एक नये दावेदार पैदा हो गये हैं विपुल गोयल।

लोकसभा का चुनाव जीतने के बाद कृष्णपाल सबसे पहले विपुल गोयल के सेक्टर 17 स्थित आवास पर ही धन्यवाद करने पहुंचे थे। यद्यपि राजनीतिक एवं सामाजिक हल्कों में कभी इनका नाम सुनने में नहीं आता था, फ़िर भी गोयल आज के दिन भाजपा टिकट पाने के सबसे नज़दीक समझे जाते हैं। एक चश्मदीद के मुताबिक इनके घर में ही चल रही एक अनौपचारिक मीटिंग में जब अजय गौड ने टिकट पाने के लिये कुछ ज़्यादा ही उछल कूद दिखाते हुए पार्टी (ज़िला) अध्यक्ष होने का हवाला दिया तो गोयल ने उन्हें ऐसे धमका दिया जैसे किसी बच्चे को। गोयल का कहना था,''...यह प्रधानी मेरी ही दिलाई हुई है और जिस बिल्डिंग में तेरी प्रधानी का दफ़्तर है वह भी मेरी ही दी हुई है...।''

विदित है कि ज़िला भाजपा कार्यालय सेक्टर 16 की जिस इमारत में चल रहा है वह इन्हीं गोयल की है। जानकार बताते हैं कि गोयल की शहर में कई इमारतें हैं, आवासीय एवं व्यवसायिक।

शेष पेज दो पर